University of Rajasthan
Jaipur

SYLLABUS

(Three/Four Year Under Graduate Programme in Deaf, Dumb & Blind - Hindi)

I & II Semester

Examination-2023-24

As per NEP – 2020

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए. –मूक बधिर – प्रथम सेमेस्टर (हिन्दी)
प्रश्नपत्र – आदिकाव्य एवं भक्तिकाव्य

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट – 150 अंक
प्रश्न प्रत्र – 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों को आदिकाल और भक्तिकाल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों से अवगत कराना। 2. आदिकालीन और भक्तिकालीन काव्य तथा कवियों से परिचय कराना। 3. आदिकालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना। 4. भक्तिकालीन साहित्य और भक्ति आन्दोलन की अवधारणा स्पष्ट करना। 5. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. आदिकालीन परिवेश : राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे। 2. आदिकालीन शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा। 3. भक्तिकाल की सामान्य परिस्थितियों तथा विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे। 4. प्रमुख भक्त कवियों तथा उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।
खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 03 अंक का होगा।
खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2, इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से कुल 03 काव्यांश (एक कवि से एक) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।
खण्ड – स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

- आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- आदिकालीन साहित्य की अंतर्धाराएँ (सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य एवं रासो साहित्य)
- भक्तिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- भक्तिकाव्य की प्रमुख अंतर्धाराएँ (संतकाव्य, सूफीकाव्य, कृष्ण काव्य एवं राम काव्य)

इकाई – 2

ढोला मारू रा दहा – संपादक नरोत्तम दास स्वामी, सूर्यकरण पारीक, राम सिंह
दोहा संख्या – 8,9,10,19,20,21,37,38,40,49 = 10

विद्यापति – विद्यापति, संपादक – शिवप्रसाद सिंह

सुन रसिया अब न बजाऊ बिपिन बँसिया (9)
देख देख राधा रूप अपार (10)
चाँद सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे (14)
विरह व्याकुल बकुल तरुवर, पेखल नंदकुमार रे (26)
कुंज भवन से चलि भेलि हे रोकल गिरधारी (36)

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

इकाई – 3

कबीरदास – कबीर ग्रंथावली, संपादक – श्यामसुंदर दास, परिमार्जित पाठ – पुरुषोत्तम अग्रवाल

साखी – चेतावनी को अंग

पद –

मन रे जागत रहिये भाई	(राग गौड़ी – 23)
पांडे कौन कुमति तोहि लागी	(राग गौड़ी – 39)
हम न मरैं मरिहैं संसारा	(राग गौड़ी – 43)
मन रे हरि भजि हरि भजि हरि भजि भाई	(राग गौड़ी – 122)

तुलसीदास – विनय–पत्रिका

केसव! कहि न जाइ का कहिये (111)
मन पछितैहै अवसर बीते (198)
मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो (245)

इकाई – 4

मीरां – मीरां पदावली, संपादक – शंभुसिंह मनोहर

निपट बंकट छवि नैना अटके (6)
मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरौ न कोई (10)
मैं तो गिरधर के घर जाऊँ (12)
राणाजी थे जहर दियो म्हे जाणी (22)
मीरां मगन भई हरि के गुण गाय (23)
जोगिया जी! निसदिन जोऊं बाट(25)
हरि बिन कूँण गती मेरी (38)
सखी री! मेरी नींद नसानी हो (56)

रसखान – रसखान रचनावली, संपादक – विद्यानिवास मिश्र

पद संख्या – 1,2,6,8,11,14

आन्तरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबंध लेखन (संभावित विषय) 2X15 = 30

- आदिकाल की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ)
- आदिकाल का सीमांकन एवं नामकरण
- भक्तिकाल की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ)
- भक्ति के उदय संबंधी विभिन्न मत
- भक्ति के निर्गुण और सगुण रूपों में समानता एवं अंतर
- निर्गुण पंथ और कबीरदास
- 'श्रीरामचरितमानस' का महत्त्व
- सूरदास का वात्सल्य वर्णन

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

- सूफी मत की विशेषताएँ
- रसखान का कृष्ण–प्रेम
- मीरा की विरह–वेदना

<u>अनुशंसित ग्रंथ–</u>

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास– डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका– रामपूजन तिवारी

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

बी.ए. – मूक बधिर – द्वितीय सेमेस्टर (हिन्दी)
प्रश्नपत्र – कहानी एवं उपन्यास

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट – 150 अंक
प्रश्न प्रत्र – 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों में कल्पना शक्ति और विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना। 2. कथा साहित्य के विश्लेषण की समझ और संवेदनात्मक अनुभूति का विकास करना। 3. प्रमुख कथाकारों एवं उनकी रचनाधर्मिता का परिचय कराना। 4. कहानी तथा उपन्यास कला को विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. जीवन की यथार्थ अनुभूति से परिचय हो सकेगा। 2. कथा लेखन तथा उसके प्रभाव का विश्लेषण सम्भव हो सकेगा। 3. आदर्श और सभ्य नागरिक बन सकेंगे। 4. आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी तथा भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास होगा।

प्रश्नपत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ,ब,स) में विभक्त है।

खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 03 अंक का होगा।

खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है, जिसमें इकाई 2 एवं इकाई 3 में निर्धारित पाठ से एक–एक अवतरण (एक कहानी से एक) तथा इकाई 4 (उपन्यास) से एक अवतरण आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाएंगे। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का होगा।

खण्ड – स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

कहानी – परिभाषा एवं तत्त्व
हिन्दी कहानी – उद्‌भव एवं विकास के प्रमुख चरण
उपन्यास – परिभाषा एवं तत्त्व
हिन्दी उपन्यास – उद्‌भव एवं विकास के प्रमुख चरण

इकाई – 2

उसने कहा था	–	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
पूस की रात	–	प्रेमचन्द

इकाई – 3

राजा निरबंसिया	–	कमलेश्वर
सिक्का बदल गया	–	कृष्णा सोबती

इकाई – 4

ग्लोबल गाँव के देवता – रणेन्द्र (उपन्यास)

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR

आंतरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबन्ध लेखन (संभावित विषय) 2X15 = 30

- कहानी एवं उपन्यास के स्वरूप में समानता एवं अंतर
- हिन्दी कहानी के प्रमुख आन्दोलन – नयी कहानी, सचेतन कहानी, समानान्तर कहानी, साठोत्तरी कहानी, समकालीन कहानी
- प्रेमचन्द की कहानी कला
- पाठ्यक्रम में निर्धारित किसी एक कहानी की मूल संवेदना एवं शिल्प–विधान
- उपन्यास के प्रकार (सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक)
- हिन्दी उपन्यास : विकास के चरण
- हिन्दी उपन्यास परम्परा में प्रेमचन्द का महत्व

<u>अनुशंसित ग्रंथ–</u>

1. ग्लोबल गांव के देवता – रणेन्द्र
2. मानसरोवर भाग–1 – प्रेमचन्द
3. हिन्दी उपन्यास का इतिहास– गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास– रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. हिन्दी कहानी का विकास– मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. कहानी : नई कहानी– नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. कहानी की रचना प्रकिया– परमानन्द श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

Dy. Registrar
(Academic)
University of Rajasthan
JAIPUR